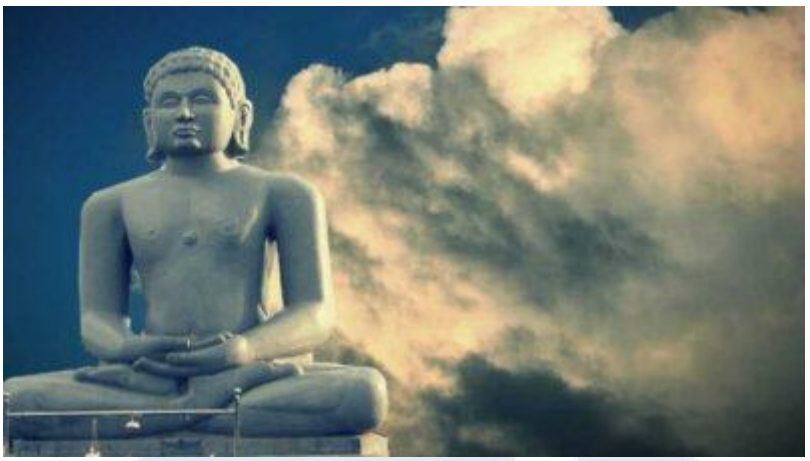

चन्द्रप्रभु चालीसा

वीतराग सर्वज्ञ जिन,
जिन वाणी को ध्याय।

लिखने का साहस करूं,
चालीसा सिर नाय।

देहरे के श्री चन्द को
पूजों मन वच काय।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ऋद्धि सिद्धि मगल करें,
विघन दूर हो जाय।

जय श्री चन्द्र दया के सागर,
देहरे वाले ज्ञान उजागर।

नासा पर है दृष्टि तुम्हारी,
मोहनी मूरति कितनी प्यारी।

देवों के तुम देव कहावो,
कष्ट भक्त के दूर हटावो।

समन्तभद्र मुनिवर ने ध्याया,
पिंडी फटी दर्श तुम पाया।

तुम जग में सर्वज्ञ कहावो,
अष्टम तीर्थंकर कहलावो।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

महासेन के राजदुलारे,
मात सुलक्षणा के हो प्यारे।

चन्द्रपुरी नगरी अति नामी,
जन्म लिया चन्द्र- प्रभु स्वामी।

पौष वदी ग्यारस को जन्मे,
नर नारी हरषे तब मन में।

काम क्रोध तृष्णा दुखकारी,
त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी।

फाल्गुन वदी सप्तमी भाई,
केवल ज्ञान हुआ सुखदाई।

फिर सम्मेद शिखर पर जाके,
मोक्ष गये प्रभु आप वहाँ से।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

लोभ मोह और छोड़ी माया,
तुमने मान कषाय नसाया।

रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी,
वीतराग तू हित उपदेशी।

पंचम काल महा दुखदाई,
धर्म कर्म भूले सब भाई।

अलवर प्रान्त में नगर तिजारा,
होय जहां पर दर्शन प्यारा।

उत्तर दिशि में देहरा माहीं,
वहां आकर प्रभुता प्रगटाई।

सावन सुदि दशमी शुभ नामी,
आन पधारे त्रिभुवन स्वामी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

चिन्ह चन्द्र का लख नर नारी,
चन्द्रप्रभु की मूरत मानी।

मूर्ति आपकी अति उजियाली,
लगता हीरा भी है जाली।

अतिशय चन्द्र प्रभु का भारी,
सुनकर आते यात्री भारी।

फाल्गुन स्दी सप्तमी प्यारी,
जुड़ता है मेला यहां भारी।

कहलाने को तो शशि धर हो,
तेज पुंज रवि से बढ़कर हो।

नाम तुम्हारा जग में सांचा,
ध्यावत भागत भूत पिशाचा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

राक्षस भूत प्रेत सब भागें,
तुम सुमरत भय कभी न लागे।

कीर्ति तुम्हारी है अति भारी,
गुण गाते नित नर और नारी।

जिस पर होती कृपा तुम्हारी,
संकट झट कटता है भारी।

जो भी जैसी आश लगाता,
पूरी उसे तुरत कर पाता।

दुखिया दर पर जो आते हैं,
संकट सब खो कर जाते हैं।

खुला सभी को प्रभु द्वार है,
चमत्कार को नमस्कार है।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अन्धा भी यदि ध्यान लगावे,
उसके नेत्र शीघ्र खुल जावें।

बहरा भी सुनने लग जावे,
पगले का पागलपन जावे।

अखंड ज्योति का घृत जो लगावे,
संकट उसका सब कट जावे।

चरणों की रज अति सुखकारी,
दुख दरिद्र सब नाशनहारी।

चालीसा जो मन से ध्यावे,
पुत्र पौत्र सब सम्पति पावे।

पार करो दुखियों की नैया,
स्वामी तुम बिन नहीं खिवैया।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

प्रभु मैं तुम से कुछ नहिं चाहूं,
दर्श तिहारा निश दिन पाऊँ।

करूँ वंदना आपकी,
श्री चन्द्र प्रभु जिनराज।

जंगल में मंगल कियो,
रखो 'सुरेश' की लाज॥

जाप:- ॐ ह्रीं अर्ह चन्द्रप्रभु नमः

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य जैन चालीसा

आदिनाथ चालीसा

अजितनाथ चालीसा

संभवनाथ चालीसा

अभिनंदननाथ चालीसा

सुमतिनाथ चालीसा

पद्मप्रभु चालीसा

सुपार्श्वनाथ चालीसा

चंद्रप्रभु चालीसा

पुष्पदंत चालीसा

शीतलनाथ चालीसा

श्रेयांसनाथ चालीसा

वासुपूज्य चालीसा

विमलनाथ चालीसा

अनंतनाथ चालीसा

धर्मनाथ चालीसा

शांतिनाथ चालीसा

कुंथुनाथ चालीसा

अरहनाथ चालीसा

मल्लिनाथ चालीसा

मुनि सुव्रतनाथ चालीसा

नमिनाथ चालीसा

नेमिनाथ चालीसा

पार्श्वनाथ चालीसा

महावीर चालीसा